उपसंहार

इस प्रकार शोध के अंत में हम कह सकते हैं कि 'यौनिकता का विमर्श' हमारे समाज में कोई भ्रम या अश्लीलता का परिचायक नहीं है और न ही यह विषय हमारे समाज को असभ्य बनाएगा बल्कि आज के समय में परिस्थितियों के अनुकूल और समय की मांग के लिए एक उचित विषय है। हमारे समाज में बढ़ते यौन अपराध को देखते हुए भी यह विषय आवश्यक हो जाता है। दूसरी बात यह है की समाज में यौनिकता को लेकर अधूरा ज्ञान फैलाया गया है। इस विषय की सही जानकारी होना भी हर वर्ग के लिए जरूरी हो गया है। खासकर स्त्रियों का इस क्षेत्र में प्रवेश करना बहोत ही आवश्यक है। हमारे समाज में यौनिकता को एक पुरुषवादी दृष्टि से दिखाया गया है। इन पुरुषवादी दृष्टि की परिचायक नैतिकता, मर्यादा, पवित्रता, कर्तव्य स्त्री के लिए नकारात्मक सोच को स्थापित करते हैं। और स्त्रियों को इन मानदंडों के बीच रखकर ही इनकी भूमिका तय की जाती रही है। ऐसा ही हमारे समाज में होता आ रहा है।

जो स्वरुप समाज ने स्त्री के लिए निर्मित किये हैं हमारा समाज उसी दायरे में ही स्त्री को देखने का पक्षपाती है। यही स्थिति साहित्य में भी है। समाज जो देता है साहित्य उसे उसी रूप में प्रतिबिंबित करता है। साहित्य ने भी स्त्री और स्त्री लेखिकाओं को परंपरा और लीक में ही देखने की कोशिश की है। लेकिन नारीवादी दृष्टिकोण ने स्त्री और उनके लेखन को नयी चेतना से सोचने को मजबूर कर दिया है। इसके लिए नारीवादी दृष्टि ने पितृसत्ता और जेंडर की समझ को हमारे सामने रखा और इन्हें स्त्री के लिए एक टूल्स के रूप में समझाया है। कि कैसे हमारा समाज पितृसत्ता और जेंडर असमानता को स्त्रियों पर थोप रहा है। इन कारणों से परिचित होकर आज महिला लेखिकाएँ अपने लिए समाज में समान अधिकारों की मांग और स्वतंत्रता के लिए लेखन कार्य में जुटी हुई हैं। और साहित्य की पुरुषवादी मानसिकता लगातार उन लेखिकाओं पर चरित्रहीन होने का आरोप लगाता रहा है। अपनी यौन इच्छा की अभिव्यक्ति, यौन स्वतंत्रता, यौन अधिकार मांगना गलत कैसे है? जब वह पुरुष के लिए उचित है तो स्त्री के लिए भी उचित होना चाहिए। क्योंकि सेक्स एक मानवीय जरुरत है तो

सेक्स को मानवीय स्तर पर देखना भी जरूरी है। और इसके लिए जो प्रयास नारीवादी दृष्टि ने किया है उससे आगे बढ़कर साहित्य को यह जिम्मेदारी निभानी होगी। न की यौन अभिव्यक्ति को अश्लील मानकर साहित्य से अलग करना चाहिए।

यौनिकता का विमर्श आज के समय में और भी जरूरी विषय है हमारे समाज के भ्रम को तोड़ने के लिए भी इस विषय की प्रासंगिकता है क्योंकि यह सिर्फ सम्भोग, कामुकता, विलासिता ही नहीं है बल्कि हम क्या चाहते है, एक स्त्री अपनी यौनिकता को लेकर क्या सोचती है ये सब भी इस विषय के अनिवार्य तत्व हैं। यौनिकता स्त्री स्वास्थ्य, प्रजनन, व्यायाम, यौन इच्छा, और अभिव्यक्ति में भी इस विषय की अनिवार्यता को समझा जा सकता है। आज भी पितृसत्ता जो बाजार के रूप में हमें दे रही है उसे स्त्रियों को स्वीकारना पितृसत्ता के ही हक में जाता है लेकिन स्त्रियाँ खुद के लिए जो चाहती हैं उसका फैसला खुद स्त्री ही तय करेगी ।स्त्री यौनिकता को कैसे अपने लिए और अपने हित में चुनना है इसका चुनाव स्त्री ही करेगी न की पुरुष। इसके बाद भी अगर स्त्री पर अश्लीलता या असभ्य बनने का आरोप लगता है तो स्त्री को यह चुनौती स्वीकार है क्योंकि अब स्त्रियाँ अपनी शर्तों पर जीने के लिए इच्छुक हैं।